भारत सरकार

पर्यटन मंत्रालय

लोक सभा

लिखित प्रश्न सं. †2460

सोमवार, 4 अगस्त, 2025/13 श्रावण, 1947 (शक)

को दिया जाने वाला उत्तर

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी भारत के बीच अंतर-सांस्कृतिक पर्यटन

†2460. श्री दुरई वाइको:

क्या **पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार उत्तर पूर्व क्षेत्र (एनईआर) और दक्षिणी भारत, विशेषकर तमिलनाडु के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यटन संपर्क को मजबूत करने के लिए कदम उठा रही है;

(ख) क्या सरकार ने उक्त क्षेत्रों के बीच अंतर-सांस्कृतिक पर्यटन परिपथ, अनुभवात्मक यात्रा, या छात्र/युवा आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए कोई विशिष्ट योजनाएँ या पहल शुरू की हैं;

(ग) क्या तिरुचिरापल्ली, जो एक प्रमुख आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और विरासत केंद्र है, को ऐसी अंतर-क्षेत्रीय पर्यटन संवर्धन योजनाओं के अंतर्गत शामिल किया जा रहा है या इस पर विचार किया जा रहा है;

(घ) क्या सरकार ने उत्तर पूर्व राज्यों की राजधानियों और त्रिची सहित प्रमुख दक्षिण भारतीय शहरों के बीच बेहतर हवाई और रेल संपर्क सुनिश्चित करने के लिए नागरिक उड्डयन मंत्रालय और भारतीय रेलवे के साथ बातचीत की है; और

(ङ) यदि हाँ, तो कार्यान्वित या प्रस्तावित परियोजनाओं का ब्यौरा क्या है, और ऐसे संपर्कों के माध्यम से अधिक सांस्कृतिक एकीकरण और पर्यटन-आधारित आजीविका के अवसरों के निर्माण के लिए भविष्य की क्या रूपरेखा है?

उत्तर

पर्यटन मंत्री (श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (ङ): जी हाँ, नागर विमानन मंत्रालय ने देश में असेवित और अल्पसेवित हवाई अड्डों से क्षेत्रीय हवाई संपर्क बढ़ाने और आम जनता के लिए हवाई यात्रा को किफायती बनाने के लिए 21.10.2016 को क्षेत्रीय संपर्क योजना 'उड़े देश का आम नागरिक' (आरसीएस-उड़ान) शुरू की।

इस योजना के अंतर्गत, पर्यटन संबंधी संपर्क को मज़बूत करने के उद्देश्य से, पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) और दक्षिण भारत सहित देश भर में पर्यटन-आरसीएस (टीआरसीएस) के अंतर्गत 53 पर्यटन आरसीएस मार्ग संचालित किए जा रहे हैं। इन मार्गों को पर्यटन मंत्रालय द्वारा 100% व्यवहार्यता अंतर निधि (वीजीएफ) प्रतिपूर्ति से वित्त पोषित किया गया था, जिससे देश के पर्यटन स्थलों और सांस्कृतिक स्थलों तक सीधी हवाई संपर्क सुविधा उपलब्ध हुई है। यद्यपि आरसीएस

उड़ान के अंतर्गत पूर्वोत्तर क्षेत्र के हवाई अड्डों और दक्षिण भारतीय हवाई अड्डों के बीच कोई सीधी हवाई संपर्क सुविधा नहीं है, फिर भी कनेक्टिंग उड़ानों के माध्यम से अप्रत्यक्ष संपर्क सुविधा उपलब्ध है।

क्षेत्रीय संपर्क योजना (आरसीएस-उड़ान) के अंतर्गत पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) में कुल 90 मार्ग चालू किए गए हैं, जो पूर्वोत्तर के राज्यों के 10 हवाई अड्डों और 02 हेलीपोर्ट को जोड़ते हैं।

भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) ने बताया है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में विषय आधारित परिपथ पर भारत गौरव ट्रेनों की कुल 17 यात्राएँ संचालित की गईं, जिनमें 9,246 पर्यटकों ने तमिलनाडु का भ्रमण किया। इन 17 यात्राओं में से, तिरुचिरापल्ली (त्रिची) की 4 यात्राएँ शामिल थीं और 1,923 पर्यटकों ने तिरुचिरापल्ली (त्रिची) का भ्रमण किया।

आईआरसीटीसी ने युवा संगम टूर्स के एक भाग के रूप में भारत के दक्षिणी भाग और पूर्वोत्तर के गंतव्यों को जोड़ने वाले विभिन्न यात्राओं का आयोजन किया है। यह युवा संगम टूर्स भारत सरकार द्वारा "एक भारत श्रेष्ठ भारत" योजना के तहत लोगों के बीच आपसी संपर्क को मज़बूत करने, खासकर विभिन्न राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों के युवाओं के बीच संपर्क को मज़बूत करने की एक पहल है। युवा संगम टूर्स में, सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र और तमिलनाडु के संस्थानों को एक साथ जोड़ा गया है।

आईआरसीटीसी पूर्वोत्तर क्षेत्र और दक्षिण भारत के बीच पर्यटन संपर्क प्रदान करने वाले घरेलू हवाई पैकेज भी संचालित करता है। नीचे दी गई तालिका में इससे संबंधित विवरण दिया गया है:

क्र. सं.	**पैकेज का नाम**	**स्रोत**	**गंतव्य**	**अवधि**	**प्रस्थान**
1.	केरल लक्ज एस्केप एक्स-बागडोगरा	बागडोगरा	मुन्नार/थेक्कडी/अलेप्पी/ त्रिवेंद्रम/कोच्चि	6 रात/7 दिन	11.10.2025
2.	केरल लक्ज एस्केप एक्स-गुवाहाटी	गुवाहाटी	मुन्नार/थेक्कडी/अलेप्पी/ त्रिवेंद्रम/कोच्चि	6 रात/7 दिन	11.10.2025

पूर्वोत्तर भारत सांस्कृतिक अनुभवों पर आधारित विविध पर्यटन-आधारित आजीविका के अवसर प्रदान करता है, जैसे समुदाय-आधारित पर्यटन, पर्यावरण-अनुकूल होमस्टेज, सांस्कृतिक प्रदर्शन, प्रकृति-आधारित गतिविधियाँ, पाक-कला पर्यटन और टिकाऊ खेती। इसी प्रकार, दक्षिण भारत आदिवासी कलाओं, ग्रामीण अनुभवों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान वाले कार्यक्रमों के माध्यम से अपार संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

इस तरह के सांस्कृतिक एकीकरण और पर्यटन से जुड़ी आजीविका, विरासत को संरक्षित करके और विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर एक टिकाऊ और समावेशी भविष्य की रूपरेखा तैयार करने में मदद करती है।

*****